



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 12 अप्रैल, 2021

'लटिलि गुरु' एप

बांग्लादेश में टाका स्थिति भारतीय उच्चयोग के इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र द्वारा आम जनमानस को संस्कृत सखाने वाले एक एप 'लटिलि गुरु' की शुरुआत की गई है। यह एप विश्व भर में वदियार्थियों, धार्मिक वदिवानों, भारतवर्दों और इतहासकारों के बीच संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिये भारतीय सांस्कृतिक संबंध परषिद की ओर से चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा है। 'लटिलि गुरु' नाम का यह संवादात्मक एप संस्कृत सीखने को आसान और मजेदार बनाएगा। यह एप संस्कृत सीख रहे लोगों और संस्कृत सीखने की इच्छा रखने वाले लोगों को खेल, प्रतियोगिता, पुरस्कार जैसे आसान तरीको से यह भाषा सीखने में मदद करेगा। इस एप को शकिषा के साथ-साथ मनोरंजन को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परषिद के मुताबकि, दुनिया के उन वभिन्न विश्वविद्यालयों ने इस 'लटिलि गुरु' एप में रुचि ज़ाहिर की है, जहाँ संस्कृत पढ़ाई जाती है। माना जाता है कि भारत में संस्कृत भाषा की उत्पत्तिलगभग 3500 पूर्व हुई थी। संस्कृत को लगभग सभी भारतीय भाषाओं की जननी माना जाता है और यह भारत में बोली जाने वाली प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। गौरतलब है कि संस्कृत को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिये सबसे अनुकूल वैज्ञानिक भाषा माना जाता है।

वशिव पार्कसिन दविस

वशिव भर में प्रत्येक वर्ष 11 अप्रैल को वशिव पार्कसिन दविस के रूप में मनाया जाता है। इस दविस के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य आम लोगों को पार्कसिन रोग के बारे में जागरूक करना है। पार्कसिन एक ऐसी बीमारी है, जिसमें तंत्रिका तंत्र लगातार कमजोर होता जाता है। इस बीमारी का कोई इलाज़ उपलब्ध नहीं है। पार्कसिन के कारण चलने-फरिने की गति धीमी पड़ जाती है और मासपेशियाँ सख्त हो जाती हैं तथा शरीर में कंपन की समस्या पैदा हो जाती है। सामान्यतः 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों में पार्कसिन रोग के लक्षण दिखते हैं कति यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है। शरीर में कंपन, जकड़न, शथिलि गतिशीलता, झुककर चलना, याददाशत संबंधी समस्याएँ और व्यवहार में बदलाव आदि इसके प्रमुख लक्षण हैं। यह मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाओं को नुकसान पहुँचाता है, जिससे डोपामाइन के स्तर में कमी हो जाती है। डोपामाइन एक रसायन है, जो मस्तिष्क से शरीर में व्यवहार संबंधी संकेत भेजता है। यद्यपि दवा रोग के लक्षणों को न्यंत्रित करने में मदद कर सकती है, कति इस रोग को पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता है। आँकड़ों की माने तो दुनिया भर में, लगभग 10 मिलियन लोग इस बीमारी से पीड़ित हैं।

वशिव होम्योपैथी दविस

होम्योपैथी के महत्त्व और चकितिसा जगत में इसके योगदान को उजागर करने के लिये प्रत्येक वर्ष 10 अप्रैल को वशिव होम्योपैथी दविस का आयोजन किया जाता है। यह दविस होम्योपैथी के संस्थापक डॉ. क्रश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन की जयंती को भी संदर्भित करता है। होम्योपैथी के संस्थापक और वभिन्न चकितिसीय पद्धतियों के जनमदाता डॉ. क्रश्चियन हैनीमैन का जनम 10 अप्रैल, 1775 को जर्मनी में हुआ था। डॉ. क्रश्चियन हैनीमैन द्वारा होम्योपैथी की खोज अठारहवीं सदी के अंत के दशक में की गई थी। 'होम्योपैथी' शब्द की उत्पत्तिलगभग ग्रीक शब्दों से हुई है, जिसमें 'होमोइस' का अर्थ 'समान' से तथा 'पैथोस' का अर्थ 'दुख' से है। यह 'समः समम् शमयति' या 'समरूपता' दवा सिद्धांत पर आधारित एक चकितिसीय प्रणाली है। यह प्रणाली दवाओं द्वारा रोगी का उपचार करने की एक ऐसी विधि है, जिसमें किसी स्वस्थ व्यक्त में प्राकृतिक रोग का अनुरूपण करके समान लक्षण उत्पन्न किया जाता है जिससे रोगग्रस्त व्यक्तिका उपचार किया जा सकता है।

लीलावती पुरस्कार

केंद्रीय शकिषा मंत्रि हाल ही में नई दिल्ली में महिला सशक्तीकरण से संबंधित अखिल भारतीय तकनीकी शकिषा परषिद (AICTE) के लीलावती पुरस्कारों का वतिरण किया। लीलावती पुरस्कार अखिल भारतीय तकनीकी शकिषा परषिद (AICTE) की एक पहल है, जिसका उद्देश्य AICTE के अनुमोदित संस्थानों द्वारा महिलाओं के बीच 'समानता और नषिपक्षता' को बढ़ावा देने हेतु किया जा रहे प्रयासों को मान्यता प्रदान करना है। इस पुरस्कार का वषिय 'महिला सशक्तीकरण' है और इसका लक्ष्य स्वच्छता, स्वास्थ्य और पोषण जैसे मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के लिये 'पारंपरिक भारतीय मूल्यों' का उपयोग करना है। इस पुरस्कार के माध्यम से AICTE साक्षरता, रोजगार, प्रौद्योगिकी, ऋण, वपिणन, नवाचार, कौशल विकास, प्राकृतिक संसाधन और महिलाओं के अधिकार जैसे मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने का प्रयास कर करता है। प्रत्येक उप-श्रेणी में, शीर्ष तीन वजिताओं को प्रमाण पत्र के साथ-साथ पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार वजिता को 1 लाख रुपए, दूसरे वजिता को 75,000 रुपए और तीसरे वजिता को 50,000 रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी। इस पुरस्कार का नाम 12वीं शताब्दी में भारतीय गणतिज्ञ भास्कर II द्वारा रचित पुस्तक 'लीलावती' के नाम पर रखा गया है। लीलावती भारतीय गणतिज्ञ भास्कर II की बेटी का नाम था।

